स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

के मानव्य विद्या संकाय अंतर्गत पी.एच.डी.हिंदी उपाधि

हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध का प्रारूपण

हिंदी-मराठी दलित साहित्य में व्यक्त प्रतिरोधी चेतना : एक तुलनात्मक अध्ययन

विशेष संदर्भ : मोहनदास नैमिशराय और शरणकुमार लिंबाले

शोधकर्ता

प्रा. जेलित आनंदराव कांबळे

हिंदी विभाग

विट्ठलराव पाटील महाविद्यालय, कळे जि.कोल्हापुर

शोध निर्देशक

डॉ. सुभाष श्रीरसागर

अध्यक्ष, हिंदी विभाग

बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय, वसमत जि. हिंगोली

नवम्बर - २०१७

हिंदी-मराठी दलित साहित्य में व्यक्त प्रतिरोधी चेतना : एक तुलनात्मक अध्ययन

विशेष संदर्भ : मोहनदास नैमिशराय और शरणकुमार लिंबाले

प्रस्तावना :

हिंदी-मराठी भाषा में कथा साहित्य गद्य की प्राचीन एवं लोकप्रिय विधा रही है | कोई भी विषय अध्ययन का केंद्रबिन्दू तभी बनता है, जब उसके प्रति अतिरिक्त लगाव होता है | अध्यन-अध्यापन का कार्य करते समय मेरी रूचि विशेष रूप से दलित साहित्य से रही है | लगभग ९० के बाद हिंदी साहित्य में दलित विमर्श की लहर आयी | इसमे पढ़ते समय कथा साहित्य बड़ीमात्रा में आया |दलित साहित्य का आरंभ हम मराठी साहित्य से ही मानते है, क्योंकि दलित साहित्य प्रथमत: मराठी भाषा में ही आया दलित समाज पर होनेवाले अत्याचार,छुवाछुत,समाज से बहिष्कृत करना आदी का चित्रण मराठी साहित्य मे मिलता है | मराठी भाषा के दलित लेखकोंने दलितों पर हो रहे जुल्म, शोषण, अत्याचार का प्रतिरोध करनेवाला साहित्य लिखा है | हिंदी साहित्य में दलित लेखन ९० ब्बे के बाद ही दिखाई देता है | हिन्दू संस्कृति में अछुत मानी जानेवाली जातियों के लिये सबसे पहले महात्मा ज्योतिराव फुले ने ‘ दलित ‘ शब्द का प्रयोग किया था | उन्हें जाति विरोध आंदोलनों का प्रथम अग्रदूत कहा जा सकता है |

भारत की लम्बी गुलामी एक बड़ा कारण भारतीय समाज की रूढ़ग्रस्थ और सडीगली जाति व्यवस्था और छुआछूत की कुरीति को माना जा सकता हैं | लम्बे समय तक सामाजिक शोषण और दमन का शिकार रहे हरिजन और गिरिजन जातियों को अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के रूप में भारत के संविधान में सूचीबद्ध किया गया है ताकि उन के लिए सामाजिक न्याय सुनिश्चित किया जा सके इन प्रयासों के सुपरिणाम सामने आने लगे है जिनमें से एक भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य की नई प्रवृति का विकास हो रहा हैं | आवश्यकता इस बात की है की दलित समाज उनका परिवेश उनका आर्थिक पक्ष, राजनैतिक पक्ष, धार्मिक पक्ष, सामाजिक पक्ष, सांस्कृतिक पक्ष, बहिस्कृत बस्तियों में रहने की विवशता, इनका शाश्वत दारिद्रय, भूक, दलितों के हिस्सो में आते असह्य अनुभव इस साहित्य की विशषता है |

दलित साहित्य दलित जीवन के संपूर्ण सरोकारों को समेटते हुए केवल दलित जीवन की त्रासदी को ही अभिव्यक्त नही करता, बल्कि अन्य समाजों के साथ उसके संबंध दलित जीवनांतर्गत लगाव, भेदभाव और जड मानसिकता को भी प्रकट करता है |

दलित चेतना के विकास में योगदान देनेवालो में प्रमुख हिन्दी भाषा में मोहनदास नैमिशराय- अपने अपने पिंजरे, हाशिए से बाहर- डॉ. राजनरानी मीनू, हिस्से की रोटी - डॉ. शत्रुघ्न कुमार, आधेपर अन्त-विपिन बिहारी, दलित अंतरद्वंद्व- स्वरूपचंद बैंध्द, दलित जीवन की कहानियाँ-गिरिराजश, घुसपैठिये-ओमप्रकाश वाल्मीकि,हिंदी के कथाकरों की पहली कहानी- सूरजपाल चव्हाण, तलाश- जयप्रकाश कर्दम, मोची का बेटा-मोहनलाल फिलोरिया, संघर्ष - डॉ. सुशिला टाकभौरे आदी साहित्यकारो के साहित्य के कारण हिन्दी भाषा में इनका साहित्य प्रेरणादायी लगा, और डॉ. शरणकुमार लिंबाले के मराठी भाषा साहित्य में दलितों के स्वत्वबोध की भावना जागृत हुई है तथा उनके अपने निजी अनुभव और गहराइयों के कारण दलित समाज की सच्ची तस्वीरे सामने आयी हैं | इनके साहित्य में सवर्ण सोच और मनुवादी व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह, आक्रोश, दलितव्यथा, भोगे हुये यथार्थ और आत्याचार का प्रतिरोध मुखर है |

अनुसंधान की भूमिका

मानव सभ्यता का इतिहास जितना पुराना है उतना ही कथा का इतिहास पुराना दिखाई देता है | हर भाषा-हर समाज में कथा की परम्परा मिलती है | मानव निर्मिती के बाद नाना-नानी तथा दादा-दादी की दुनिया से ही कथासाहित्य का उद्भव और विकास मानना पड़ेगा | कहानी पहिले मौखिक रूप से ही रही होगी | हिन्दी और मराठी कहानी भी इसी परंपरा से होते हूए विकास के नये-नये सोपान पार कर चुकी है | दलित कहानी हिन्दी साहित्य में १९९० के बाद ही पढने को मिली | हिन्दी के दलित कहानीकारों की कहानियों में विभिन्न समस्याओं को पढा | हिन्दी के कई दलित साहित्यकारों ने अपने कथासाहित्य के माध्यम से समाज में प्रतिरोधी चेतना लाने का प्रयास भी किया है | दलितों की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, समस्याओं को आधुनिक युग के समाज के सामने प्रस्तुत करने का यह प्रयास है |

जाति ,धर्म , लिंग और अर्थ पर आधारित शोषण और उसका प्रतिरोध पिछले कई वर्षों से मराठी और हिन्दी दलित साहित्य और आलोचना का विषय बना हुआ है | कोयी भी विषय अनुसंधान का केंद्रबिन्दू तभी बनता है, जब उसके प्रति अतिव लगाव होता है | हिन्दी मराठी साहित्य का अध्ययन - अध्यापन करते समय कई दलित साहित्यकारों का साहित्य पढ़ते समय ऐसा महसुस हो रहा था की यह परिवेश, परिवार, नायक सभी मेरे अपने है | मैने जो अनुभूत किया है, वह मै पढ रहा था, तभी मेरे मन में यह इच्छा हुयी की इसी विषय पर शोध कार्य करना चाहिए | कथाकार संजीव प्रतिरोध के नये क्षेत्र और

साहित्य विषय पर बोलते हुये कहते है , "प्रतिरोध शब्द समाज विज्ञान में निरंतन अपने अर्थ का विस्तार करता गया है | प्रारंभ में राजसत्ता पर काबिज हमलावर या पिट्टू सरकार के खिलाफ चलनेवाला संगठित हतियारबंद संघर्ष प्रतिरोध कहलाता था | बादमे प्रतिरोध के अंतर्गत किसी भी उत्पीड़न का सत्ता के खिलाफ तमाम रुपोमे चलनेवाला आन्दोलन भी प्रतिरोध के उस अवधारणा में सम्मेलित हो गया | धीरे-धीरे हर विचारधारात्मक वर्चस्ववादी धारा के विरुद्ध होनेवाली हर कार्यवाही प्रतिरोध कहलाई जाने तभी रमणिका गुप्ता की युद्धरत आम आदमी , मोहनदास नैमिशराय की बयान , गंगाधर पानतावने की अश्मितादर्श आदी पत्रिकाएँ जन साहित्य अंबेडकरवादी एवं आदिवासी साहित्य को समर्पित है | हमेशा पढ़ता रहा | हिन्दी मराठी दलित साहित्य से संबंधित जानकारी बढती रही |

इसी प्रकार से जयप्रकाश कर्दम, ओमप्रकाश वाल्मीकि, शरणकुमार लिंबाले,शुशीला टाकभौरे , मोहनदास नैमिशराय, आदी के साहित्य को पढ़ने से मेरी रूचि इसी साहित्य में अनुसंधान करने की हुई | इसमे दलितों ने जो भोगा हुआ सत्य है | दलितो पर हुऐ अन्याय,अत्याचार,शोषन आदी का अध्ययन इसमे किया जा सकता है |दलित समाज आजभी आर्थिक रूपसे , सामाजिक रूपसे , राजनैतिक रूपसे , सांस्कृतिक रूपसे दलितेत्तर जातियों से पिछड़ा हुआ है | उन्हें विकास के दायरे में लाने की आवश्यकता है |

अनुसंधान का उद्देश्य या आवश्यकता :

प्रस्तुत शोध विषय का अध्ययन तुलनात्मक प्रविधि एवं आलोचनात्मक प्रविधि के माध्यम से होगा | इन प्रविधियों के अध्यन के तहत " **हिन्दी - मराठी दलित साहित्य में व्यक्त प्रतिरोधी चेतना** " **एक तुलनात्मक अध्ययन** हिन्दी-मराठी दलित साहित्य के अंतर्गत प्रतिरोध बदलाव के बिंदुओं को परखा जायेगा | हिन्दी और मराठी के साहित्य में प्रतिरोधी चेतना का स्वरुप लिए प्रचार का था और आज की स्थिति में वह किस प्रकार है | साहित्य आज के युग में समाज एवं मनुष्य के प्रति कितना प्रतिबद्ध है आदि मूल्यों को परखा जायेगा | इसलिए इस विषय का महत्व यह है कि, समकालिन युग में हिन्दी और मराठी साहित्य कहां स्थित है | दलित साहित्य का मूल प्रतिरोधी स्वर किस ओर है | आदी तथ्यों को घटनाओंकों,देशकाल वातावरण एवम पात्रो के माध्यम से परखा जायेगा | इसलिए इस अनुसंधान से एक तथ्यात्मक दृष्टीकोन का विकास होगा जो हिन्दी-मराठी दलित साहित्य को नये रूप से देखने का एक नजरिया विकसित होगा |

अध्ययन और अध्यापन करते समय विशेष करके मेरी रूचि दलित साहित्य से ही रही हैं | मैने अध्ययन करते समय मराठी दलित साहित्यकारो का बहुत सा साहित्य पढ़ा इसमे शरणकुमार लिंबाले और हिन्दी साहित्य में मोहनदास नैमिशरॉय का साहित्य समाज में हो रहे उत्थान - पतन का साहित्य लगा | इनके साहित्य में एक ऐसी विचारधारा है जो मनुष्य को सोचने पर मजबूर करती है | इसी लिए मैंने ' हिन्दी - मराठी दलित साहित्य में प्रतिरोधी चेतना एक तुलनात्मक अध्ययन" विशेष सन्दर्भ मोहनदास नैमिशराय और शरणकुमार लिंबाले का साहित्य मैंने अनुसंधान के लिए चुना है | महाराष्ट्र का दलित समाज और दिल्ली यूपी का दलित समाज, यहाँ और वहाँ की सामाजिक, आर्थिक , राजकीय , और सांस्कृतिक परिस्थितियों का अध्ययन इस अनुसंधान में किया जायेगा | मैंने इस विषय के संबंध में मेरे मार्गदर्शक गुरु आदरणीय डॉ. सुभाष क्षीरसागर सरजी से चर्चा की तब उन्होंने इस विषय में कुछ सुझाव देकर इस पर अनुसंधान करने की अनुमति प्रदान की तथा ' **हिन्दी - मराठी दलित साहित्य में व्यक्त प्रतिरोधी चेतना" एक तुलनात्मक अध्ययन विशेष सन्दर्भ मोहनदास नैमिशराय और शरणकुमार लिंबाले** यह विषय निश्चित हुआ |

अनुसंधान का लक्ष्य :

हिन्दी-मराठी दलित साहित्य के विषय में पत्र-पत्रिकाओं में बहुत सा लिखा जा रहा है | या यों माने कि

दलित विमर्श पर बहुत चर्चा हो रही है | दलितों के विभिन्न प्रश्न है जिन प्रश्नों पर चर्चा होनी चाहिए उन प्रश्नों पर चर्चा नही हुई है | ऐसे प्रश्नों को इस अनुसंधान में देखा जायेगा जो आजतक किसीने भी इसका अध्ययन नही किया गया हैं | आजभी महाराष्ट्र के हर गाँव की सीमा पर महारवाडा है,वंही लोग आज बौद्ध कहलाये जाते है | भले ही आज कुछ लोग अच्छा जीवन यापन कर रहे है, परंतु आज भी गॉवो की स्थिति, लोगों का रहन - सहन, उनके रोज के काम, उनके पारंपारिक रोजगार जो कालबाहये हो चुके है | इन्ही लोगों में मांग, महार, ढोर, चमार आदी कई जातियों का समुह इनमे आता है | इन्हें अस्पृश्य,अछुत भी कहा जाता रहा है | हिन्दी - मराठी साहित्यकारोने इन्हें दलित एह संबोधन दिया है ऐसे वर्ग के बहुतसारे प्रश्न है ऐसे प्रश्नों का हल ढूढने का प्रयास किया जायेगा | दलितों का प्रतिरोधी भाव सवर्ण के प्रति या व्यवस्था के प्रति है यह भी देखा जायेगा | आज भी ऐसे बहुत से दलित परिवार है, जो अपना और परिवार का पेट पालने के लिए अपने गाँव, प्रदेश को छोड़कर कहीं ओर जाकर उन्हें काम करना पड़ता है | दलितों का सवर्णों के प्रति संघर्ष न होकर सामाजिक, मानशिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक स्तरों पर दलित को कनिष्ठ स्थान दिया जाता हैं उसे समाप्त कर उनके बराबर समान स्थान प्राप्त करके अपने अस्थित्व की अलग पहचान कराना हैं | साहित्य और विचारधारा की दुनीयाको वैश्वीकरन ने काफी प्रभावित किया हैं, जिसके कारण दलित जीवन से संबंधित चिन्ता, चिन्तन बढ़ गया हैं | स्वतंत्रता के बाद हिन्दी - मराठी साहित्य में नव विमर्श आये दलित विमर्श भी उसीमे आता हैं | प्रस्तापित समाजव्यवस्था, जातिभेद, वर्णव्यवस्था, छुआछुत, सांस्कृतिकभेद आदी का विरोध करते हुए दलित साहित्यकारोने समाज को जो चेतना दी हैं उसका विश्लेशण यहाँ पर किया जाएगा |

सामाजिक समता के लिए दलित साहित्यकारों का प्रयास रहा है | इस अनुसन्धान द्वारा दलित समाज के लोगों के अंदर जन चेतना जागृत करने का प्रयास हैं | ताकि वे अपने मानवीय अधिकारोंसे अवगत हो सके और फिर वे अपनी सदियों की गुलामी के लबादे को दूर फ़ेंक सके और हो न हो सवर्ण समाज की सोंच दलितों के प्रति बदल सके, और वे भी दलितों को समानता का हक्क प्रदान करने का प्रयत्न करें यहीं इसका लक्ष्य होगा |

अनुसंधान का प्रारूप :

उपर्युक्त लक्ष्य को देखते हुए विषय को, “हिन्दी - मराठी दलित साहित्य में व्यक्त प्रतिरोधी चेतना” विशेष संदर्भ मोहनदास नैमिशराय और शरणकुमार लिंबाले इस शिर्षक के अंतर्गत प्रस्तुत करने का प्रयास हैं | प्रस्तुत अनुसंधान के अंतर्गत हिन्दी - मराठी दलित साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन किया जायेगा |अछूत, म्लेच्छ, दस्यु , दास, तथा और न जाने कितने गालीवाचक शब्दो से पुकारी गयी जातियों ने दलित साहित्य जो दलितों द्वारा रचित दलित चेतना संपन साहित्य के रूप में अपने अनुभव को उच्च वर्ण के साहित्यकारो के अनुमान की तुलना में मार्मिक अभिव्यक्ति प्रदान करने में सफलता पायी हैं | आज भारत ही नही पुरे दक्षिण एशिया में आर्थिक, राजनैतिक,सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में चली मानवाधिकारों की हवा ने दलितों में अन्याय के खिलाफ प्रतिरोधी चेतना को प्रवाहित करने में बड़ा योगदान दिया हैं | दलित साहित्य मनोरंजन और आनंद के लिए नही, समाज को जगाने और चेतना लाने के लिये लिखा जा रहा है | इसी लिए कभी-कभी उसका तेवर प्रगतिशील और जनपक्षीय साहित्य के अन्य आंदोलनों के समान प्रतीत होता हैं | महाराष्ट्र में जोतिबा फुले और डॉ बाबासाहेब अम्बेडकर के प्रभाववश दलित विमर्श का यह विस्फोट सर्व प्रथम मराठी के साहित्य में दिखाई दिया | उसके बाद हिन्दी, तेलगु, मलयालम, कन्नड़ और तमिल आदी विविध भारतीय भाषाओं में इसका विकास हो रहा हैं | अम्बेडकरवादी साहित्य दलितमुक्ति की खोज ज्ञान की मुक्ति के रूप में करता हैं | ब्राम्हणवादी व्यवस्था में बुद्ध ने ज्ञान को उच्च वर्णों के शिकंजे से मुक्त कराया था तथा स्वतंत्र भारत में दलित विमर्श उसी कार्य को करना चाहता हैं | इसके लिय इसे संवैधानिक शक्ति भी प्राप्त हैं | अम्बेडकरवादी साहित्य यह आंदोलन दलितों को कलम और किताब के माध्यम से संघर्ष के लिए प्रेरित करता हैं और यह विस्वास करता हैं की दलित साहित्य में जड रूढ़ जातिवादी सामाजिक संरचना को बदलने की शक्ति निहित हैं | साहित्य में प्रतिरोध और प्रतिरोध की संस्कृति यह विचार कुछ वर्षों से अधिक ही प्रचलित हो रहा हैं | भारतीय साहित्य में जितने भी विमर्श आए है इनके मूल में प्रतिरोध की भावना हैं | इसी भावधारा के आधार पर संपूर्ण लेखन चल रहा हैं| विद्वतजनों का कहना है की प्रतिरोध साहित्य का मूल लक्षण है,जो की अनवरत रूप से यह चेतना साहित्य में चलती आ रही है | इसलिए कई आलोचक इस प्रतिरोध को लेकर विगत दलित साहित्य के अध्ययन पर बल दे रहे है |

इस प्रकार से प्रतिरोध की अवधारणा एमं स्वरूप को परखते हुए, ‘ हिन्दी - मराठी दलित साहित्य में व्यक्त

प्रतिरोधी चेतना' एक तुलनात्मक अध्ययन विशेष संदर्भ मोहनदास नैमिशराय और शरणकुमार लिंबाले इनके साहित्य में प्रतिरोधी चेतना का स्वरूप एवं अवधारणा का विश्लेषण किया जायेगा | दलित साहित्य में अभिव्यक्त प्रतिरोधी चेतना के आधार पर भूमंडलीकरण, उदारवाद एवं बाजारवाद आदी बिंदुओं का अनुसंधान के माध्यम से विशलेषण किया जायेगा |साहित्य में चित्रित तत्कालीन समाज व्यवस्था के साथ-साथ समकालीन राजनीति, अर्थनीति, संस्कृति, शिक्षा एवं निति मूल्यों का विचार भी अनुसंधान में निहित होगा साथ ही साथ भाषा, शिल्प एवं शैली पर भी ध्यान दिया जायेगा |

प्रस्तुत अनुसंधान के अंतर्गत, ' हिंदी-मराठी दलित साहित्य में व्यक्त प्रतिरोधी चेतना' : एक तुलनात्मक अध्ययन विशेष संदर्भ मोहनदास नैमिशराय और शरणकुमार लिंबाले के साहित्य का शुक्ष्मता से अध्ययन हो इसीलिए सुविधा की दृष्टी से प्रस्तुत शोध विषय का विभाजन निम्नलिखित अध्यायों में पूरा किया जायेगा

अनुसंधान की रुपरेखा

प्रथम अध्याय : प्रतिरोधी चेतना की अवधारणा

प्रस्तुत अध्याय में प्रतिरोध शब्द का अर्थ साथ ही साथ साहित्य में प्रतिरोधी चेतना के अर्थ को स्पष्ट किया जायेगा | प्रतिरोधी चेतना के संदर्भ में विभिन्न लेखकों, आलोचकों और विद्वानों के विचारों कों आधार बनाकर प्रतिरोध की अवधारणा को निश्चित करने का प्रयास किया जायेगा | हिंदी-मराठी दलित साहित्य में व्यक्त प्रतिरोध का आरंभ, इसमे साहित्यि में चित्रित प्रतिरोध, राजनीतिक प्रतिरोध एवं सामाजिक प्रतिरोध के आयामों को स्पष्ट किया जायेगा, निष्कर्ष |

द्वितीय अध्याय : हिंदी-मराठी दलित उपन्यासो में व्यक्त प्रतिरोधी चेतना

हिंदी भाषी दलित साहित्यकार मोहनदास नैमिशराय का व्यक्तित्व और कृतित्व, मराठी दलित साहित्यकार शरणकुमार लिंबाले व्यक्तित्व और कृतित्व को देखा जायेगा | इन दोनों के उपन्यासों में दलित समाज की विभिन्न समस्याओ, हिंदी-मराठी दलित उपन्यासों में समाज, समाज जीवन में लोकाचार, लोकनीति, रूढ़ी, परम्परा, समाज का विभाजन, गरीबी और पीड़ा, सामाजिक विघटन, लड़ाई-झगड़े आदी में प्रतिरोधी चेतना को स्पष्ट करते हुए निष्कर्ष निकाले जायेंगे |

तृतीय अध्याय : हिंदी-मराठी दलित कहानी साहित्य में व्यक्त प्रतिरोधी चेतना

हिंदी दलित कहानी साहित्य में मोहनदास नैमिशराय के कहानियों में और मराठी के दलित साहित्य में शरणकुमार लिंबाले के कहानियों में विभिन्न समस्याऐ, कहानियों मे चित्रित समाज के विभिन्न वर्ग, रूढ़ी-परम्पराऐ,जाति-भेद , सामाजिक, सांस्कृतिक भेद, दलित नारी की समस्या, रोजगार की समस्या , सार्वजनिक भोज, सरकरी कार्यालय आदी जगह पर प्रतिरोध, समाज में आर्थिक अभाव,जमींदारो का प्रभाव,महंगाई और बेरोजगारी आदी को कहानियों के द्वारा स्पष्ट किया जायेगा , अंत: निष्कर्ष निकाले जायेंगे |

चतुर्थ अध्याय : हिंदी-मराठी दलित आत्मकथा साहित्य में व्यक्त प्रतिरोधी चेतना

हिंदी-मराठी दलित आत्मकथा साहित्य में मोहनदास नैमिशराय की आत्मकथा और शरणकुमार लिंबाले की आत्मकथा साहित्य में चित्रित सामाजिक समस्या, वर्ण विषमता, दलितों के अन्तर्विरोध, धार्मिक स्थानों पर निषेध, आर्थिक विषमता और बेगार प्रथा, सामाजिक, सांस्कृतिक भेद, जाति-भेद, समाज के विभिन्न वर्ग, रूढी-परम्परायें और दलित नारी, नारी समस्या और अंधश्रद्धा, सार्वजनिक भोज, सार्वजनिक निवास्थान, सरकारी कार्यालय आदी में प्रतिरोध, समाज चेतना आदी को आत्मकथाओ के माध्यम से स्पष्ट करते हुए अंत: निष्कर्ष निकाले जायेंगे |

पंचम अध्याय : हिंदी-मराठी दलित कविताओ में व्यक्त प्रतिरोधी चेतना

हिंदी-मराठी दलित कवि मोहनदास नैमिशराय और शरणकुमार लिंबाले की कविताओ में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की विचारधारा, कविता में दलित समाज का सामाजिक चित्रण, सांस्कृतिक समस्याये,संस्कृति की पारिभाषाऐ, साम्प्रदायिकता जातिभेद, उच्च-नीचता, सांस्कृतिकपर्व, मेले, त्योंहार,लोकसंस्कृति, लोकगीत, भारत में विभिन्न संस्कृतिया, डॉ.अम्बेडकर का सांस्कृतिक दृष्टीकोण, दलित - सवर्ण संस्कृति में प्रतिरोध, दलित समाज में सामाजिक, आर्थिक, राजकीय प्रतिरोधी चेतना आदी का विश्लेषण कविताओ के माध्यम से किया जायेगा अंत: निष्कर्ष स्पष्ट किया जायेगा |

षष्टम अध्याय : हिंदी-मराठी दलित साहित्य में व्यक्त भाषा एवं शिल्प

हिंदी-मराठी दलित साहित्य में मोहनदास नैमिशराय और शरणकुमार लिंबाले के साहित्य का शिल्पगत अध्ययन किया जायेगा | तथा साथ ही साथ उनके साहित्य की भाषागत विशेषताओ का प्रमुखता से अध्ययन होगा | दलित साहित्य में चित्रित भाषा, मुहावरे, कहावते, लोकोक्तिया, लोककथाये और दलित शब्दों का विवरण दिया जायेगा | दलित साहित्य में चित्रित नवीन कथा विन्यास,चित्रात्मकता, भाषा शैली,बिम्ब, प्रतीक आदी को स्पष्ट करते हुए अंत में निष्कर्ष दीये जायंगे |

यह प्रस्तावित अनुसंधान का प्रारुप है इसमे यथा संभव आवश्यकता अनुरूप शोध मार्गदर्शक के अनुमति से परिवर्तन एवम् परिवर्धन भी हो सकता है |

शोधकर्ता

प्रा. जेलित कांबळे
हिंदी विभाग
विट्ठलराव पाटील महाविद्यालय,कळे
तह.पन्हाळा जि.कोल्हापुर

शोधनिर्देशक

डॉ. सुभाष श्रीरसागर
अध्यक्ष,हिंदी विभाग
बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय,वसमत
तह. वसमत जि. हिंगोली

संदर्भग्रन्थ सूचि

१] हिंदी नवजागरण और संस्कृति - सम्भूनाथ

२] दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र -शरणकुमार लिम्बाले

3] आधुनिक भारतीय नवजागरण - -- शेलेश प्रसाद

4] दलित कहानी संचयन - सं.रमणिका गुप्ता

५] प्रेमचन्द और भारतीय किसान - प्रो.रामबक्ष

६] रामदरश मिश्र के उपन्यासो में ग्रामीण परिवेश -अनिल काले

७] कबीर साहित्य में नीतितत्व - श्रीमती उर्मिला मिश्रा

८] प्रेमचन्द साहित्य में दलित चेतना - डॉ.बी.एस.जाधव

९] हिंदी दलित साहित्य का विकास - डॉ.प्रमोद कोवप्रत

१०] हिंदी का दलित आत्मकथा साहित्य -डॉ.संजय मुनेश्वर

११] यथार्थ और आदर्शवाद -डॉ.शैफाली

१२] हिंदी उपन्यास और यथार्थवाद - त्रिभुवन सिंह

१३] स्त्री, परम्परा और आधुनिकता -सं.राजकिशोर

१४] सामाजिक समस्याये -राम आहूजा

१५] स्त्रीचे भावविश्व आणि आधुनिकिकरण - डॉ.इंगोले प्रतिमा